॥ श्री लक्ष्मी स्तवराज ॥

हरियरसि सिरिनीनॆ सर्वद
हरिय वक्षस्थल निवासिनि
हरिय दक्षिण तॊडॆयॊळॊप्पुतकालदेशदलि
हरिय सहितदि हर्यनुज्ञदि
हरिय सेवानिरुतगैयुत
हरिय पदकॆ नीडि सुखिसुव शिरियॆ वंदिपॆनु ॥ १ ॥

हरिय करुणदि सरसिजांडव
हरिय सहितदि हरिय तॆरदलि
हरिय मनकति प्रीतिगोसुग सृष्टिस्थितिलयव
हरिय चित्तनुकूलमाडुत
हरिय संकल्पानुसारदि
हरियनुग्रह पडॆद निन्ननु स्तुतिपॆननवरत ॥ २ ॥

हरिय रमणियॆ हरिय ज्ञानव
हरिय पदयुग भक्ति पालिसि
हरिय सहितदि निन्न रूपव ऎन्न मनदल्लि
हरिय वल्लभॆ तॊरॆ संतत
हरिय मन संकल्पदंते
हरिय मूरुति नॆनहनित्तू पॊरियॆ मज्जननी ॥ ३ ॥

हरिय हृदयदलिद्द तॆरदलि
शिरियॆ ऎन्नय सदन मध्यदि
हरिय सहितदि नीनॆ नॆलसी सर्वकालदलि
हरिय निन्नय सेवॆ गोसुग
परम निन्न विभूति सहितदि
हरि विभूतिज सकल भाग्यवनित्तु पॊरॆयॆन्न ॥ ४ ॥

हरिय मानिनि सकल संपद
हरिय प्रेमदियित्तु नीने
हरिय सेवॆय गैसि ऎन्ननु पॊरॆयॆ मज्जननी
हरिय सहितदि नीनॆ संतत
बॆरॆतु मनॆयलि स्वर्णवृष्टिय
करॆदु भाग्यवनित्तु ऎन्ननु पॊरॆयॆ शिरिदेवि ॥ ५ ॥

हरिय सह वैकुंठलोकदि
इरुवॊ तॆरदलि ऎन्न सदनदि
हरिय सहितदलिद्दु मंगळ कार्यदिनदिनदि
हरिय तत्त्वविचार निन्नय
हरिय महिमॆयनरुहि संतत
हरिय भक्तरसंगदलि हरिदासनॆनिसॆन्न ॥ ६ ॥

हरियु जनकनु जननि नीने
शिरियनित्तू पालिसेंदेनु
हरिय मंदिरवेनिप ऐन्नय हृदय मध्यदलि
हरिय गूड्यनुदिनदि निन्नय
हरिय रूपव तोरि भाग्यव
करदि नीडिपरियलेन्ननु पोरेये शिरिदेवि ॥ ७ ॥

हरिय पदसंजातवादा
धरणिमंडल शिरिये निनगे
अरसनागिह हरियगूडि निधियनीडम्म
हरिय करुणदि भाग्यनीडुव
परम शकुतियु निनगे इरुवुदु
करुणदिंदलि नोडि भाग्यवनित्तु पोरेयम्म ॥ ८ ॥

हरिगे अरसी ऐनिप निन्ननु
सरसिजासन रुद्रशक्ररु
परत्भकुति ज्ञान पूर्वक भजिसिनिजगतिय
त्वरदि सेरिद श्रुतियवार्तेय
करणदिंदरितीग निन्नय
चरणकमलव मनदिसंतत भजिपेकल्याणि ॥ ९ ॥

माधवन मनप्रेम मानिनि
सादरदि सौभाग्य धनगळ
यादवेश सुधामद्विजवरगित्त तेरदंते
मोद मनदलि सांद्रसुखमय
बोधभकुति विरकुति पालिसि
वेदगम्यन भजने माडिसु वेदकभिमानि ॥ १० ॥

उदितभास्कर कोटिभासळे
बिदुरमंडल जैप वदनेये
मदनमूरुति कोटिनिभ लावण्यपूरितळे
पदुमनयनळे नासचंपक
भिदुरफलक सुफाल कुंतळ
मदनकार्मुक पुब्बुयुगळवु करुणयुग शोभे ॥ ११ ॥

कदपु कन्नडि कुमुद कुट्मल
रदनपंक्तियु रक्त ओष्टवु
चरुरेयानन मंदहासवु चंद्रचंद्रिकेयु
उदय ताम्रललाट शोभिते
ओदगि राजिप भृंगकुंतळे
उदक बिंदुगळेंबो बैतले मुत्तुराजितळे ॥ १२ ॥

मुद्दु चुबकवु कंबु कंधर
पॊद्दुकॊंडिह बाहुद्वंद्ववु
ऐद्दु तोरुत करिय करतॆर तावॆ शोभिपवॊ
मुद्ररत्नांगुळिय संघदि
पॊदिद्हस्तद्वयवु शोभिप
पद्मकट्मगळॆनिसि सेवकगभय नीडुववु ॥ १३ ॥

भक्तजनतति प्रेमवारिधॆ
भक्तजन हृत्पद्मवासिनि
भक्तजनदारिद्र्यहारियॆ नमिपॆननवरत
लकुमि क्रमुक सुकंठदलि श्री –
रेख शोभितॆ नित्यनित्यदि
मुकुत हारावळि सुशोभितॆ परममंगळळॆ ॥ १४ ॥

निन्नदासन माडॆ लकुमियॆ
घन्नतर सौभाग्य संपद
चॆन्नवागी नीडि ऐन्नय सदनदॊळगिद्दू
निन्न पतियॊडगॊडि दिनदिन
ऐन्न कैयलि पूजॆ गॊळुता
निन्न रूपव तोरि पालिसु पालसागरजॆ ॥ १५ ॥

मातॆ निन्नय जठरकमल सु –
जातनागिह सुतन तॆरदलि
प्रीतिपूर्वक भाग्यनिधिगळनित्तुनित्यदलि
नीत भकुति ज्ञान पूर्वक
दात गुरु जगन्नाथ विठलन
प्रीतिगॊळिसुव भाग्य पालिसि पॊरॆयॆ नीयॆन्न ॥ १६ ॥

॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥